प्रेस संक्षिप्ति

मानव की खुशहाली में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले समुद्र, आज मत्स्यग्रहण की अत्यधिकता, समुद्री प्रदूषण, भूमंडलीय तापक्रम वृद्धि, समुद्र अम्लीकरण और जलवायु परिवर्तन जैसे कई मुद्दों के कारण गंभीर संकट में है, जो समुद्र और उसके परितंत्र में तीव्र अवनति का कारण बनते हैं।

सतत विकास हेतु समुद्र विज्ञान के संयुक्त राष्ट्र दशक इस परिकल्पना के साथ सामने आया कि समुद्र की अवनति के चक्र में परिवर्तन एवं महासागर, समुद्र एवं तटों के सतत विकास हेतु बेहतर परिस्थिति का निर्माण करने की आवश्यकता है। दिसंबर 2017 में यूनाइटेड नेशन जनरल असेंबली के बहत्तरवें सत्र में आगामी दशक को सतत विकास हेतु समुद्र विज्ञान के संयुक्त राष्ट्र दशक(2021-2030) घोषित किया है।

उल्लेखनीय बात ये है कि यह दशक नवीन ज्ञान उत्पन्न करने के लिए समुद्र प्रक्रियाओं की गहरी अनुशासनात्मक समझ और समाधान-उन्मुख अनुसंधान दोनों को संबोधित करेगा। यह ज्ञान समुद्र पर दाब को कम करने, समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करके उन्हें पुनःस्थापित करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए समुद्री संपत्ति की रक्षा करने में सामाजिक कारकों का समर्थन करेगा। निर्धारित छह सामाजिक परिणाम निम्नानुसार हैं:

- एक स्वच्छ महासागर जहां प्रदूषण के स्रोत को पहचाना जाए और उसका उपचार कर उसे हटाया जाए
- एक स्वस्थ एवं तन्यक महासागर जहाँ समुद्री परितंत्र को प्रतिचित्रित कर उसकी रक्षा की जाए
- एक पूर्वानुमेय महासागर जिसकी धारा एवं आगामी महासागर की परिस्थितियों को समझने की क्षमता समाज में हो
- एक निरापद महासागर जहां लोग महासागर से उत्पन्न होने वाले खतरों से सुरक्षित रह सकें
- खाद्य आपूर्ति के प्रावधान को सुनिश्चित करने वाले संधारणीय महासागर
- आंकड़े, सूचना और प्रौद्योगिकियों के लिए निर्बाद प्रवेश के साथ एक पारदर्शी महासागर

दिनांक 13-15 मई 2019 को कोपेनहेगन में प्रथम वैश्विक योजना बैठक का आयोजन किया गया जिसमें इस दशक के संबंध में समान स्तर की सूचना के साथ सभी प्रमुख हितधारकों ने भाग लिया। हिंद महासागर और आरओपीएमई क्षेत्र में आने वाले देशों के विचारों के समानुक्रमण एवं संबोधन हेतु दिनांक 8-10

जनवरी, 2020 को रासप्रौसं में हिंद महासागर के उत्तरी मध्य / देश के साथ साथ-आरओपीआरआरएमई समुद्र हेतु क्षेत्रीय योजना कार्यशाला आयोजित की जा रही है । इसका उद्देश्य समुद्री विज्ञान हेतु सतत विकास के लिए किसी क्षेत्र की विशिष्ट प्राथमिकता, आवश्यकता और उनके योगदान के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र दशक के लक्ष्यों को समझना है ।

इससे पहले दिनांक 6 एवं 7 जनवरी, 2020 को रासप्रौसं में "हिंद महासागर में सदस्य राज्यों की सुरक्षा और सतत विकास हेतु तटीय भेद्यता की क्षेत्रीय रूपरेख "पर दो दिवसीय कार्याशाला भी आयोजित की जाएगी । इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र के देशों की तटीय भेद्यता के लिए एक सामान्य ढांचे पर निर्णय लेना होगा जो प्राकृतिक संकट और जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित होने की दिशा में उन्मुख है । दोनों कार्यशालाएं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के प्रतिपातन में आयोजित की जा रही है ।

ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, कांगो, फ्रांस, कुवैत, मालदीव, रूस, ट्यूनीशिया, तंजानिया, श्रीलंका, सऊदी अरब, ब्रिटेन, अमेरिका और भारत जैसे विभिन्न देशों के लगभग 100 प्रतिनिधि इस आयोजन में भाग लेंगे। भारत इस कार्यकारी योजना समूह (ईपीजी) का सदस्य है जो सतत विकास के लिए महासागर विज्ञान पर संयुक्त राष्ट्र के निर्णय के कार्यान्वयन योजना के विकास में समर्थन करने वाले आईओसी के लिए एक सलाहकार है।